# भास के नाटक

# उरूभंग

संस्कृत मूल : महाकवि भास
भाषान्तर : भारतरत्न भार्गव

सूत्रधार एवं :
गायक दल : (नृत्यात्मक गतियों के साथ)

भीष्म द्रोण दो तट, जल जयद्रथ,
शकुनि ताल हैं, कर्ण तरंग।
मकर द्रोणसुत, कृपाचार्य भी
दुर्योधन हैं स्रोत अभंग।।
खड़ग बाण रज, रिपुदल सरिता,
जिसे किया अर्जुन ने पार
वे केशव नौका स्वरूप हैं,
जन–जन का करते उद्धार।।

**(युद्ध सूचक संगीत धीरे–धीरे शोक संगीत में बदलता है।**
**अलग–अलग दिशाओं से तीन सैनिकों का प्रवेश)**

प्रथम सैनिक : यह युद्ध स्थल
अब है निश्चल
बिखरे हैं शव
शापित नीरव।
यह ध्वंस काल भूखे गिद्धों को तृप्त करे।

दूसरा सैनिक : यह रक्तिम नद
हैं टूटे रथ
सौ कौरव क्षत
अनगिन जन हत
रिपुदल में केवल दुर्योधन ही शेष रहे।

तीसरा सैनिक : वे हय प्रचंड
ये हस्ति शुंड
वैभव मंडित
अब हैं लुंठित
क्रुद्ध युद्ध–रत भीम शत्रु को खोज रहे।

समूह स्वर : यह दारुण चीख़–पुकार, भयानक क्रन्दन।
क्षत–विक्षत हाथी–घोड़े, रथ, सैनिक गण।
खंड–खंड सब अस्त्र–शस्त्र बिखरे हैं।
जैसे तारागण, नभ से टूट गिरे हैं।।

**(भीम और दुर्योधन का गदा युद्ध करते हुए प्रवेश। गदाओं के टकराने और आघात–प्रत्याघात की ध्वनियाँ। नेपथ्य से 'वायु पुत्र भीम ने अद्‌भुत वार किया।' 'देखो, देखो, महाराज दुर्योधन के वार से भीम विचलित हो गया।' 'दोनों वीर भयंकर युद्ध कर रहे हैं।' प्रशंसा, जिज्ञासा और विभिन्न दशाओं के सूचक स्वर और युद्ध के वाद्य। वर्णन के अनुसार दोनों का अभिनय।)**

प्रथम सैनिक : दो दुर्द्धर्ष समर भूमि में, भीम और दुर्योधन,
गदा युद्ध में क्षत–विक्षत हैं दो बलवीरों के तन।
शिला खंड पर वज्रपात करते मेघों का गर्जन,
दारुण दुर्दमनीय भयंकर गदा–युद्ध है भीषण।

दूसरा सैनिक : अरे, भूमि पर गिरे भीम इस प्रबल वार से,
अट्टहास करते दुर्योधन जय विचार से।
किन्तु भीम फिर उठे क्रुद्ध स्वर में ललकारा–
'प्रस्तुत हो दुर्योधन, यम ने तुम्हें पुकारा।'

तीसरा सैनिक : गदा युद्ध के वार–प्रहार प्रबलतम तीखे,
रूधिर स्नात दो पुंज लाल प्रवाल सरीखे।
किन्तु भीम श्लथ तन होकर जब गिरे धरा पर,
चकित व्यास, अर्जुन हताश, थे दीन युधिष्ठिर।

**(भीम दुर्योधन के गदा वार से भूमि पर गिर जाता है। सबको हताश मुद्रा में देखकर फिर उठता है और दुर्योधन पर वार करता है।)**

दूसरा सैनिक : दुर्योधन ने कहा भीम से, संशय छोड़ो,
मैं निशस्त्र को नहीं मारता तुम भय छोड़ो।

कातर दृष्टि भीम को तब केशव सुधि आई।

जंघा पर दे ताल कृष्ण ने युक्ति सुझाई !

**(जांघ पर ताल का ध्वनि संकेत। भीम की प्रसन्न मुद्रा। मद्धिम प्रकाश। भीम का दुर्योधन की जंघाओं पर वार। दुर्योधन की मर्मान्तक पुकार। भयानकता व्यक्त करता संगीत। विपर्यय संगीत। खंड–खंड स्वर एवं ताल)**

तीसरा सैनिक : ओह, यह कैसा क्रूर प्रहार !

युद्ध नीति का घोर उल्लंघन

निर्मम दुर्दम वार !

प्रथम सैनिक : दुर्योधन की जंघाओं पर किया भीम ने वार !

कौरवराज गिरे धरती पर प्राणान्तक प्रतिकार !

दूसरा सैनिक : द्वैपायन यह दृश्य देखकर, गए व्योम में विचलित मन,

कपट युद्ध देखा हलधर ने मूंद लिए अपने लोचन !

**(करुण संगीत। हल्का प्रकाश ! अपनी खंडित जंघाओं को घसीटते हुए दुर्योधन मंच के अग्र भाग में आता है। भीम का प्रस्थान।)**

दुर्योधन : ओह ! घोर कष्ट है।

भीम ने खंडित की मर्यादा

केशव के इंगित से !

ओह कृष्ण, तुमने ये क्या किया ?

हे स्वर्ग के देवताओं, गुरुजनों,

साक्षी हैं आप।

अन्याय से प्राण लिए जा रहे।

ओह, है असहनीय वेदना।

: **(करुण संगीत और दुर्योधन की वेदना को व्यक्त करने वाले ध्वनि संकेत। युद्धवाद्यों की ध्वनि के साथ बलराम के स्वर।)**

बलराम : सुनो, पार्थिवो सुनो। उचित नहीं था यह।

(नेपथ्य से) : काल रूप मेरे इस हल को रिपुदल कैसे भूल गया।

मैं तटस्थ था यही सोच, वह अभिमानी प्रतिकूल गया।
दुर्योधन की जंघा पर जब दुष्ट भीम ने वार किया,
हुई कलंकित मर्यादा तब, ये अनीति प्रतिकार किया।

**(दुर्योधन इन पंक्तियों को सुनकर प्रतिक्रिया प्रकट करते हैं। क्रोधित बलराम का प्रवेश।)**

बलराम : सौभ नगर के मुख्य द्वार का विध्वंसक है मेरा हल,
कालिन्दी के जल प्रवाह का अवरोधक है मेरा हल
भीम रक्त से स्नात भूमि को कर्दम कर दे मेरा हल,
वक्ष क्षेत्र को खंडित कर केदार बना दे मेरा हल।

दुर्योधन : ओह, भगवन बलदेव के स्वर। धन्य धन्य मैं।

बलराम : प्रिय दुर्योधन, क्षण भर प्राण करो तुम धारण।

दुर्योधन : भगवान बलराम प्रसन्न हों।
समर भूमि में किया भीम ने
मर्यादा का लंघन।
लुंठित शीश। आपके चरणों का
मैं करता वन्दन !

प्रथम सैनिक : ओह, भग्न तन पर
रक्त चन्दन
आर्द्र और अनुलिप्त,
सरक सरक धरती पर चलते
शब्द वेदना सिक्त

छूसरा सैनिक : जैसे अमृत मंथन के पश्चात्
देव और असुरों के मध्य हुआ संघर्षण
सागर जल में धीरे–धीरे
शान्त, क्लान्त, उद्भ्रान्त वासुकि का प्रत्यर्पण !

बलराम : वत्स दुर्योधन, कष्ट ये देखा नहीं जाता तुम्हारा !
निश्चय ही प्रतिकार करूँगा इस अधर्म का।

दुर्योधन : नहीं, भगवन नहीं।
त्याग दें यह रोष, विग्रह,
शान्त हो यह क्लेश,
पितृ तर्पण दाय हो अब,
पाँडवों का शेष !

बलराम : वत्स ! आत्मस्थ रहो क्षण भर।

दुर्योधन : प्रभु, क्या करेंगे आप ?

बलराम : सुनो, **(क्रोधित मुद्राओं और नृत्यात्मक चारी के साथ पूरे मंच पर अभिनय करता है।)**
अपने हल के तेज़ नुकीले अग्रभार से
पांडव दल का नाश करूँ मूसल प्रहार से,
किया कृष्ण ने छल है जिससे तुम हारे
पांडव जन भी स्वर्ग जाएंगे साथ तुम्हारे !

दुर्योधन : नहीं भगवन, ऐसा ना करें।
पूरी हुई भीम प्रतिज्ञा !
मेरे भाई स्वर्ग सिधारे,
और मैं हूँ भूमि लुंठित।
भगवन, अब युद्ध से क्या सिद्ध होगा। **(क्रमशः)**